यो मे गर्भगतस्यापि पूर्वं संचितवान पयः ।।
शेषवृत्तिविधानाय स किं सुप्तोऽथवा मृतः ।।

सुखस्य दुःखस्य न कोपि दाता परो ददातीति कुबुद्धिरेषा ।।
अहं करोमीति वृथाऽभिमानः स्वकर्मसूत्रग्रथितो हि लोकः ।।

सुनो भरत भावी प्रबल, बिलखि कही मुनिनाथ ।
हानि लाभ जीवन मरण, यश अपयश विधि हाथ ।।

आगम शब्दकी प्रसिद्धि

आगतं शिववक्त्रेभ्यो गतं च गिरिजाश्रुतौ

असारे खलु संसारे सारमेतच्चतुष्टयम् ।
काश्यां वासः सतां संगो गङ्गाम्भः शिवपूजनम् ।।
अयोध्या मथुरा माया काशी काञ्ची अवन्तिका ।
पुरी द्वारावती चैव सप्तैता मोक्षदायिका ।।

शिवशक्त्योश्च चिह्नस्य मेलनं लिङ्गमुच्यते
ईश्वर मायाका मेल ही शिवलिङ्ग नामसे कहा जाता है
शिव शब्दका अर्थ कल्याण लिङ्ग शब्दका अर्थ चिह्न या प्रतीक
अर्थात् मायाविशिष्ट परमेश्वरका ही लिङ्गके रूपमें पूजन होता है

लिङ्ग शब्दका अर्थ

शिवपुराण विद्येश्वर संहितामें लिङ्ग शब्दका अर्थ बतलाया है
लिनार्थगमकं चिह्नं लिङ्गमित्यभिधीयते ।
भं वृद्धिं गच्छतीत्यर्थाद् भगः प्रकृतिरुच्यते ।।
मुख्यो भगस्तु प्रकृतिर्भगवान् शिव उच्यते ।।

बीज अर्थात अव्यक्तावस्थापन्न वस्तुके गमक या [illegible] चिह्नको

को लिङ्ग कहते हैं और भ - अभिवृद्धिको तथा ग - प्राप्त होनेवाली वस्तु

को भग कहते हैं। उस भगके अधिष्ठाताको भगवान शिव कहते हैं।
शिवजीकी स्थूल मूर्तिको शिवलिङ्ग कहते हैं। ब्रह्माण्ड इनका
लिङ्ग है अर्थात ज्ञापक है - उस लिङ्गका ब्रह्मा और विष्णु भी आदि
अन्त न पासके। यह कथा शिवपुराणमें इसीलिये कही गयी है कि
शिव वस्तुतः सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म ही हैं यही तात्पर्य बताना
उसका अभिप्राय था। यजुर्वेद शतरुद्रीय अध्यायकी इस विषयमें
पर्याप्त प्रसिद्धि है। अर्थात अद्वय ब्रह्म ही शिवके रूपमें विद्यमान हैं।

ॐ नित्यसुखमानन्दमकारः पुरुषः स्मृतः ।।
वकारः शक्तिरमृतं मेलनं शिव उच्यते।
तस्मादेवं स्वमात्मानं शिवं कृत्वार्चयेच्छिवम् ।।

सब मौतके मुखमें

भेको धावति तं च धावति फणी सर्पं शिखी धावति
व्याघ्रो धावति केकिनं विधिवशाद् व्याधोऽपि तं धावति।
स्वस्वाहारविहारसाधनविधौ सर्वे जना व्याकुलाः
कालस्तिष्ठति पृष्ठतः कचधरः केनापि नो दृश्यते ।।

अर्थ

मेढक दौड़ता है उसके पीछे सर्प दौड़ रहा है सर्पके पीछे मयूर, मयूरके
पीछे सिंह और दैवात सिंहके पीछे व्याध (शिकारी) दौड़ रहा है।
इस प्रकार अपने भोजन और विहारकी सामग्रियोंके पीछे सभी व्याकुल हो
रहे हैं पर पीछे जो चोटी पकड़े हुए काल खड़ा है, उसे कोई नहीं देखता

वेदा विभिन्नाः स्मृतयो विभिन्ना
नासौ मुनिर्यस्य मतं न भिन्नम् ।
धर्मस्य तत्त्वं निहितं गुहायां
महाजनो येन गतः स पन्थाः ॥

१	२ नही	३ विलम्ब
४	५	६
७ विलम्ब	८ नही	९

प्रष्टा कीदृश

तनौ विधौ कंटकगेऽर्कसूनौ बुधेऽर्कलुप्ते च कुजेन्दुजाभ्याम् ।
समीक्षणे नोक्षितशीतभानौ प्रष्टा भवेद्वै कुटिलस्तदानीम् ॥

लग्नमे चंद्रमा केन्द्र (१-४-७-१०) मे शनि हो बुध अस्तका हो। चन्द्रमाको मंगल बुध पूर्ण दृष्टिसे देखते हो तो पूछनेवाला कुटिल है। लग्नमे शुभ ग्रह हो तो सरल है अन्यथा सरल नही है यदि चन्द्रमा गुरु लग्न सप्तम स्थानको मित्र दृष्टिसे देखते हो तो प्रष्टा सरल है तो उस काल सप्तमेशपर चन्द्रमा गुरुसे किसी एककी वैरी दृष्टि हो तो वक्र है। चन्द्रमा गुरु एक राशिपर हो तो सरल

गर्मीमें कोई वस्तु गर्म न हो

1 शनिश्चर या आदित्य वार की अमावस्या हो तब बंज
तुलसी की जड़ ले और गंधक मुखमें रखे। गीयां। फिर चूल्हे या
भट्ठीमे गेरे तो कभी कुछ चीज गर्म न होय

2 अग्निमे नहीं जलने की विधि

मेंडकी चरबी हाथमें मले और सुखाले। फिर अग्नि हाथ
पर धरे तो जले नहीं

3 फिटकरी अफीम नमक सांभर कलौरा और मुरगेके अंडेका
छिलका अथवा पारा इनके हाथसे मसले तो आगसे जले नहीं

चूल्हा बांधनेका तंत्र

4 मेंढककी चरबी अंजीरकी लकड़ी मे लगाकर चूल्हे या
भट्ठीमे गाड़दे तो जब तक वह लकड़ी न निकले तब तक
न जले

आगसे मुह न जले

5 नौसादर और अकरकरा मुहमें रखे और चबाकर उसी
पानी से कुल्ला करे। फिर अग्नि मुहमें धरे तो कभी न जले

शरीर न जलने की विधी

6 समुद्र फेन और मुर्गेके अण्डेका छिलका और पारा सबको बराबर
पीसले और बदनपर मले तो कभी न जले

अग्निसे हाथ न जले

7 नौसादर और कपूर दोनों को पानीमें पीसकर हाथोंपर मले
और सुखाले। फिर अग्नि को हाथों पर रखले तो कभी न जले

8 दुसरी

फिटकरी अफीम साभर नमक कनौरा मुर्गेके अंडेका छिलका
पारा ये सब बराबर लेकर पीसे और सिरकेमे मिलाकर हाथोंमे
मले और अग्नि रखले तो कभी न जले लेकिन छाया मे
सुखाले

तिसरी विधी

मेंडककी चरबी और कचंवा दोनोंको बराबर ले हाथोंमें म-
मसले तो जले नहीं